१. जहाँ-जहाँ पैर पड़े बैल के

अजय के दादाजी के खेत की चीजें खाकर निशीथ विस्मित था।
दादाजी! निशीथ पूछ रहा था कि तुम्हारे खेत की हर उपज इतनी स्वादिष्ट क्यों लगती हैं?
आजकल सब रासायनिक खादों का प्रयोग करते हैं। इससे अन्न, सब्जी, फल सब बेस्वाद हो गये हैं। हम जैविक खेती करते हैं, इसलिए यहाँ की उपज इतनी स्वादिष्ट हैं।
लेकिन इससे तो पैदावार कम होती होगी? घाटा होता होगा?

जब मैंने रासायनिक खेती शुरू की, तो १ लाख रुपये का माल बेचा और ५० हजार रुपये खर्च हो गये। हर वर्ष उत्पादन घटते रहने पर भी भाव बढ़ने से आय १ लाख दिखती रही। लेकिन खर्च ८५ हजार तक बढ़ गया।
केवल १५ हजार की कमाई!

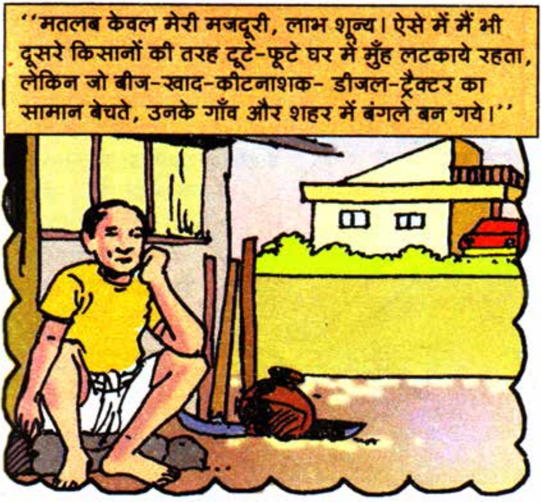
''मतलब केवल मेरी मजदूरी, लाभ शून्य। ऐसे में मैं भी दूसरे किसानों की तरह टूटे-फूटे घर में मुँह लटकाये रहता, लेकिन जो बीज-खाद-कीटनाशक- डीजल-ट्रैक्टर का सामान बेचते, उनके गाँव और शहर में बंगले बन गये।''

''ये सब पैसा तो खेती से ही गया था। इसलिए मैंने रासायनिक खेती बंद कर बैलों से खेती शुरू कर दी। देशी बीज बोया, गोबर से कंपोस्ट खाद बनाकर डाली, ऐसी फसल बोयी जिनको कीड़ों से अधिक नुकसान नहीं होता।''

रासायनिक खाद के कारण खेत बंजर हो गया था। फसल हुई सिर्फ ३० हजार की, लेकिन खर्च आया मात्र १६ हजार।
केवल १४ हजार की कमाई। पहले से भी १ हजार कम।

''एक दिन एक थकी गाय आकर मेरे दरवाजे के सामने खड़ी हो गई। मुझे लगा कि वह मुझे कह रही है''
तुम मेरी रक्षा करो मैं तुम्हारी रक्षा करूँगी।
''मैंने गौ माता को प्रणाम किया, चारा दिया और अपने घर में रख लिया।''

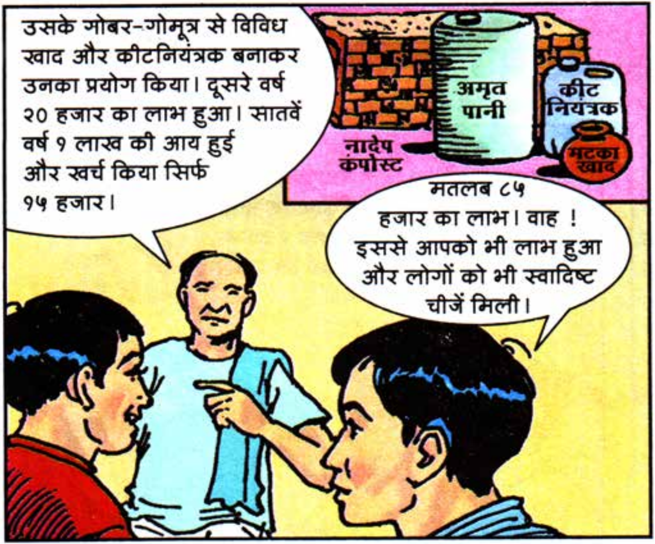
उसके गोबर-गोमूत्र से विविध खाद और कीटनियंत्रक बनाकर उनका प्रयोग किया। दूसरे वर्ष २० हजार का लाभ हुआ। सातवें वर्ष १ लाख की आय हुई और खर्च किया सिर्फ १५ हजार।
नादेप कंपोस्ट
अमृत पानी
कीट नियंत्रक
मटका खाद
मतलब ८५ हजार का लाभ। वाह ! इससे आपको भी लाभ हुआ और लोगों को भी स्वादिष्ट चीजें मिली।

केवल स्वादिष्ट ही नहीं। रासायनिक खेती ने तो पूरा अन्न जहरीला कर दिया है। इसी कारण आज इतने रोग फैले हैं। अच्छा बताओ, भारत में पहले आतंकवाद कहाँ शुरू हुआ?
पंजाब
असम

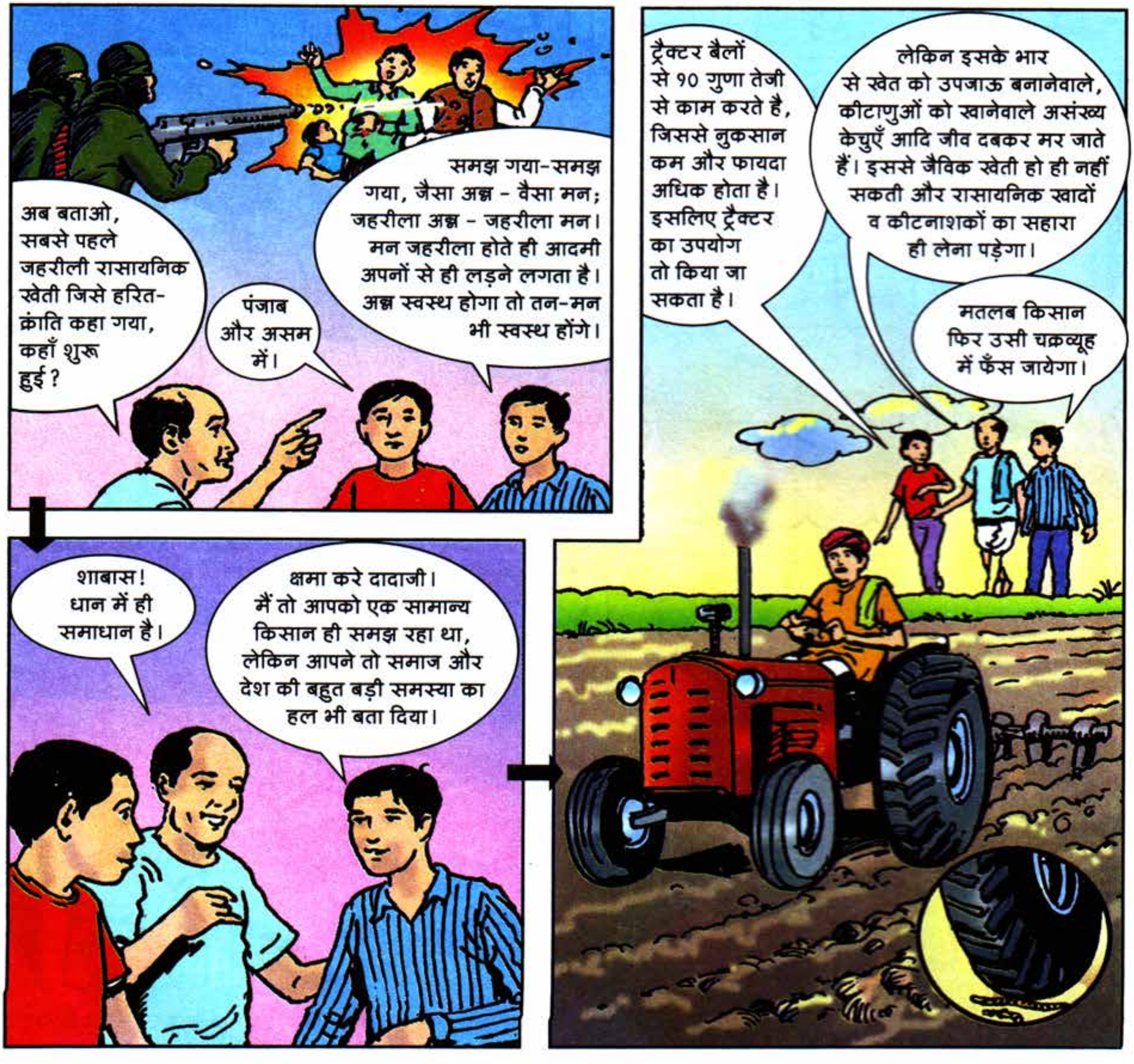
अब बताओ, सबसे पहले जहरीली रासायनिक खेती जिसे हरित-क्रांति कहा गया, कहाँ शुरू हुई ?
पंजाब और असम में।
समझ गया-समझ गया, जैसा अन्न - वैसा मन; जहरीला अन्न - जहरीला मन। मन जहरीला होते ही आदमी अपनों से ही लड़ने लगता है। अन्न स्वस्थ होगा तो तन-मन भी स्वस्थ होंगे।
शाबास! धान में ही समाधान है।
क्षमा करे दादाजी। मैं तो आपको एक सामान्य किसान ही समझ रहा था, लेकिन आपने तो समाज और देश की बहुत बड़ी समस्या का हल भी बता दिया।
ट्रैक्टर बैलों से १० गुणा तेजी से काम करते है, जिससे नुकसान कम और फायदा अधिक होता है। इसलिए ट्रैक्टर का उपयोग तो किया जा सकता है।
लेकिन इसके भार से खेत को उपजाऊ बनानेवाले, कीटाणुओं को खानेवाले असंख्य केचुएँ आदि जीव दबकर मर जाते हैं। इससे जैविक खेती हो ही नहीं सकती और रासायनिक खादों व कीटनाशकों का सहारा ही लेना पड़ेगा।
मतलब किसान फिर उसी चक्रव्यूह में फँस जायेगा।

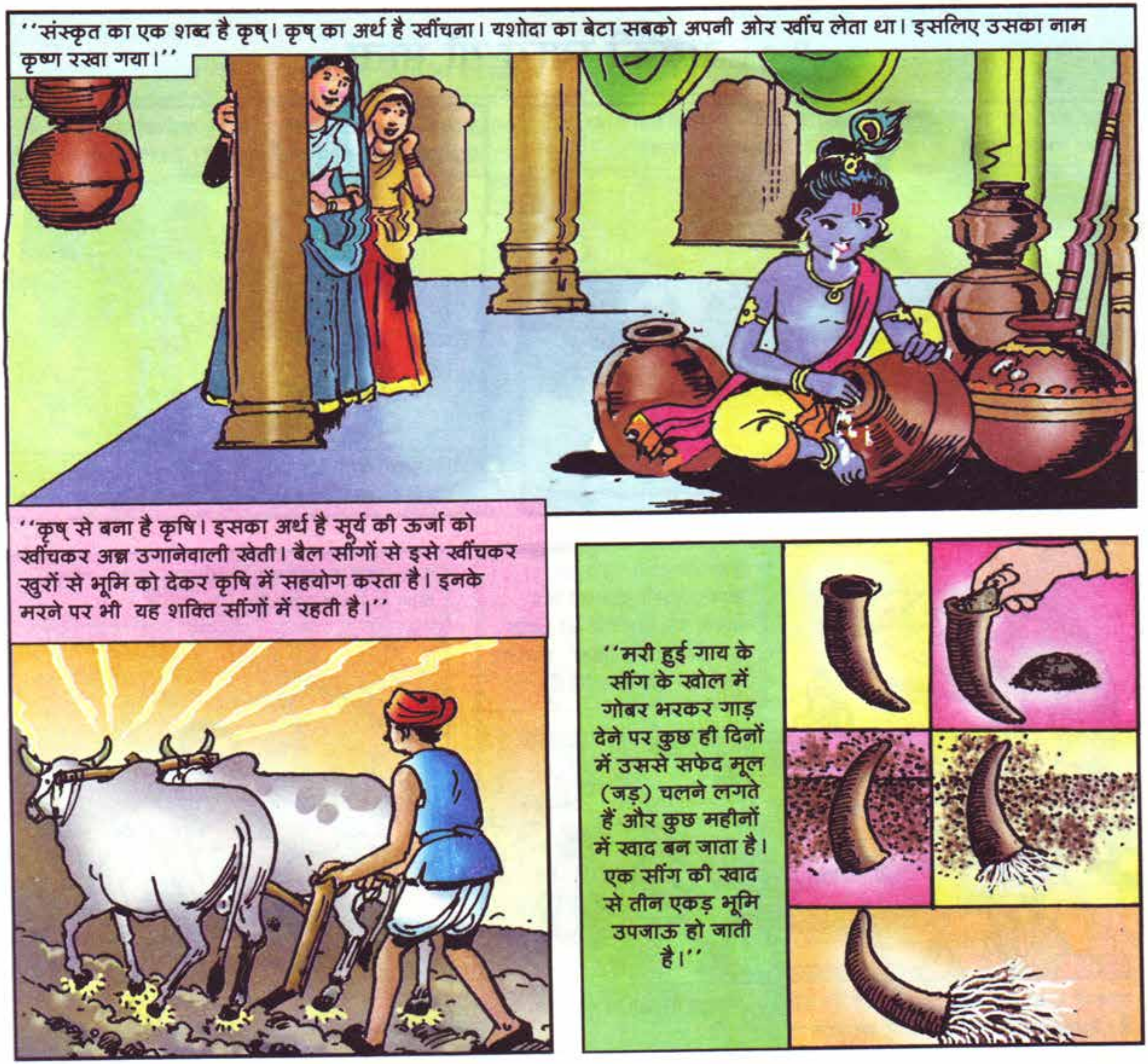
''संस्कृत का एक शब्द है कृष्। कृष् का अर्थ है खींचना। यशोदा का बेटा सबको अपनी ओर खींच लेता था। इसलिए उसका नाम कृष्ण रखा गया।''
''कृष् से बना है कृषि। इसका अर्थ है सूर्य की ऊर्जा को खींचकर अन्न उगानेवाली खेती। बैल सींगों से इसे खींचकर खुरों से भूमि को देकर कृषि में सहयोग करता है। इनके मरने पर भी यह शक्ति सींगों में रहती है।''
''मरी हुई गाय के सींग के खोल में गोबर भरकर गाड़ देने पर कुछ ही दिनों में उससे सफेद मूल (जड़) चलने लगते हैं और कुछ महीनों में खाद बन जाता है। एक सींग की खाद से तीन एकड़ भूमि उपजाऊ हो जाती है।''

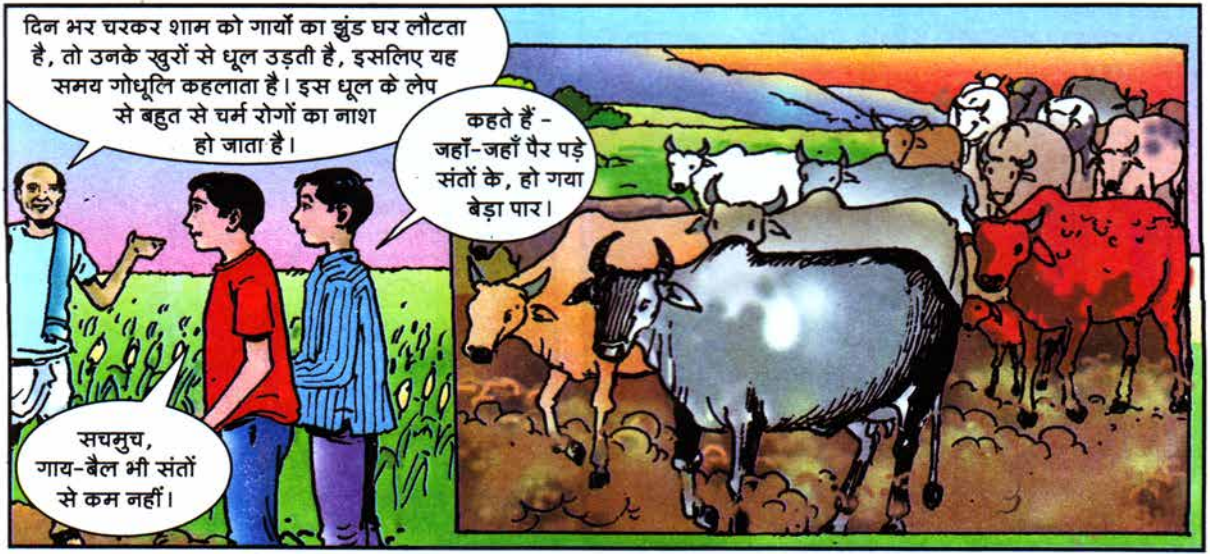
दिन भर चरकर शाम को गायों का झुंड घर लौटता है, तो उनके खुरों से धूल उड़ती है, इसलिए यह समय गोधूलि कहलाता है। इस धूल के लेप से बहुत से चर्म रोगों का नाश हो जाता है।
कहते हैं - जहाँ-जहाँ पैर पड़े संतों के, हो गया बेड़ा पार।
सचमुच, गाय-बैल भी संतों से कम नहीं।